इकाई 19 मानव विकास : स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा

संरचना

19.1 प्रस्तावना

19.2 मानव विकास के अभिगम

19.2.1 आय/सकल घरेलू उत्पाद अभिगम

19.2.2 मानव पूँजी निर्माण अभिगम

19.2.3 मानव कल्याण अभिगम

19.2.4 मौलिक न्यूनतम आवश्यकता अभिगम

19.3 मानव विकास की परिभाषा

19.4 मानव विकास के सूचक और विकास प्रतिवेदन

19.5 मानव विकास सूचकांक का परिकलन

19.6 भारत में मानव विकास

19.7 सारांश

19.8 अभ्यास प्रश्न

19.1 प्रस्तावना

काफी समय से सामाजिक विज्ञान वार्त्तालापों में विकास का मुद्दा केन्द्रीय मुद्दा रहा है। इसकी विषय-वस्तु, स्वरूप और अर्थ में प्रथम भूमंडलीय व्यवस्था के तौर पर विशेष रूप से पूँजीवाद के जाने और उसके परिपक्व होने पर काफी परिवर्तन हुए हैं। 33वें संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमेन ने 10 जनवरी 1949 को आरंभ किए गए चार सूत्रीय कार्यक्रम में इसे जो अर्थ दिया जिसे उसकी सुनिश्चितता होने तक व्यापक स्वीकार्यता मिली है। इससे पहले इसे विशेष रूप से प्रजातियों, अचल सम्पत्ति और शतरंज के खेल की चालों के संदर्भ में सीमित दायरे में प्रयुक्त किया जाता था। इसके बाद इसे लोगों, देशों और आर्थिक कौशल के संदर्भ में प्रयोग किया जाने लगा। शब्द के वास्तविक अर्थ में यह एक बदली हुई पारी थी। आज विकास एक व्यापक संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। इसे राज्य के कारण, शासन को वैध बनाने वाला, सत्ता संबंध और सबसे ऊपर राज्य के दर्शन और विचारधारा के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। तदनुरूप, 'विकास सिद्धांतों' की बाढ़ आई, 'विकास समुदायों' का गठन हुआ और 'विकास युगों अथवा दशकों' का आरंभ हुआ। तथापि, विकास बहुत से अन्य पहलुओं की अपेक्षा कुछ और अधिक सुस्पष्ट हुआ। यह शान्ति और विश्वस्तरीय शासन की स्थापना के लिए विकास के प्रयोग से सम्बन्धित था। विकसित देश जो अधिकतर पूववर्ती उपनिवेशकों जिन्हें 'नार्थ' के रूप में भी जाना जाता था, के ग्रुप से सम्बन्धित थे, कतिपय पैरामीटरों के दायरे में विकास का निर्माण करने व उसको परिभाषित करने में सफल हुए और तदोपरान्त उन्होंने सभी अन्य देशों और समुदायों को एक मात्र मानदंड से परखने की कोशिश की। वे देश और समुदाय जो मानदण्ड में निर्धारित मानकों को पूरा करने में विफल रहे, विभिन्न प्रकार के जोड़-तोड़ और विदग्ध स्थिति के अध्यधीन हो गए। अधिकांशत: ये आविष्कार इतिहास, संस्कृति तथा जनता की लोकप्रिय इच्छा के प्रतिकूल थे। एक ऐसा मानदण्ड 'मानव विकास' की धारणा एवं विचार है।

19.2 मानव विकास के अभिगम

बहुत से विद्वान् और विचारकों में गत समय में विभिन्न समयों पर मानव विकास की धारणा बनाने और उसको परिभाषित करने के लिए विभिन्न अभिगम विकसित करने का प्रयास किया गया है। उनमें से सर्वाधिक विवादित कुछ अभिगम निम्नलिखित हैं :

19.2.1 आय/सकल घरेलू उत्पाद अभिगम

यह अक्सर कहा जाता है कि "परमात्मा का वास्तविक नाम स्वर्ण है" अथवा "सर्वे गुण कंचनम् आश्रयन्ति"। किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की दौलत अथवा आय केवल उसकी वांछित रुचियों की ही अच्छी सूचक नहीं अपितु स्वतंत्र और संभावनाओं की व्यापकता की पहचान हैं। दौलत किसी व्यक्ति की परिसम्पत्ति ही नहीं है अपितु उसकी ऐसी व्यवस्था में पूर्णत: मौजूदगी भी दर्शाती है जहाँ होना उसके 'अस्तित्व का अवधारण' करता है। यह शायद सरलतम तथा किसी समय मानव विकास को मापने के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त अभिगम था। इस अभिगम के अनुसार देश का कुल (समग्र/निवल) उत्पादन उसके मौद्रिक मूल्य में परिवर्तित किया जाता है और उसे देश की कुल जनसंख्या से विभाजित कर दिया जाता है। परन्तु हाल ही में इस अभिगम की बहुत से कारणों से कटु आलोचना हुई है :

- आय मात्र एक साधन है और स्वयमेव यह अन्तिम लक्ष्य नहीं है। उच्च आय अवश्यमेव बेहतर गुणवत्ता वाला जीवन नहीं है। किसी व्यक्ति अथवा समाज का समृद्ध होना अधिकतर इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसकी आय किस प्रयोजन में प्रयुक्त हुई न कि मात्र आय के स्तर पर। दारूबाज, बीमार व्यक्ति और लम्बे समय से युद्ध और गृहयुद्धों से ग्रस्त देश की उच्च आय उनकी समृद्धि के बेहतर स्तर को प्रदर्शित नहीं कर सकती।
- आय सामाजिक परिसम्पत्तियों के मात्र प्रत्यक्ष पहलुओं को हिसाब में लेती है तथा यह अप्रत्यक्ष घटकों की ओर ध्यान नहीं देती। समृद्धि मुख्यत: किसी विशेष समाज में व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों और उसकी क्षमताओं पर निर्भर करती है जो बदले में "न्यास, मानदण्ड और नेटवर्क जैसे संगठन जो समाज में किसी व्यक्ति से सम्बन्धित कार्य को बेहतर कर सकता है, के लक्षण वाली सामाजिक पूँजी" के स्वरूप पर निर्भर करता है।
- किसी विशेष समय पर किसी देश अथवा व्यक्ति की आय भविष्य में क्षमताओं और उन्नति की संभावनाओं का निर्धारण करने में अक्षम होती है। ऐसे देश जिन्होंने शिक्षा और निपुणता मुहैया कराने जैसे मानव संसाधन विकास में अच्छे निवेश किए हैं आय का निम्न स्तर सूचित करेंगे परन्तु भविष्य में उन देशों की तुलना में अधिक सक्षम होंगे जो विद्यमान में आय के उच्च स्तर में आते हैं परन्तु इस प्रकार निवेश कम करते हैं।
- अधिकतर विषमताओं वाली उच्च आय समृद्धि का कम विषमताओं वाली मध्यम आय की अपेक्षाकृत निम्नस्तर दर्शाएगी। देशों के अनुभव बताते हैं कि मानव विकास के उच्च स्तर मर्यादित आय के स्तरों तथा मानव विकास के मलिन स्तर पर्याप्त रूप से उच्च आय के स्तरों को दर्शाते हैं।

सारांश के लिए यह सुरक्षित तौर पर कहा जा सकता है कि आय और मानव विकास के बीच सम्बन्ध न तो प्रत्यक्ष हैं और न स्वत:। आय और सकल घरेलू उत्पाद अभिगम मानव विकास के लिए आवश्यक अवश्य है परन्तु पर्याप्त शर्तें नहीं हैं।

19.2.2 मानव पूँजी निर्माण अभिगम

मानव पूँजी निर्माण को मानव संसाधन विकास अभिगम के रूप में भी जाना जाता है। यह मानव को अंतिम लक्ष्य की बजाए प्रमुखत: साधन के रूप में देखता है। ये सिद्धांत मुख्यत: आपूर्ति पक्ष पर विचार करते हैं और

मानव को महँगी उपयोगी वस्तुओं के प्रजनन के विस्तार में एक उपकरण के तौर पर लेते हैं। एक बार पुन: कोई इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकता कि प्रमुखत: मानव योग्यता ही ऐसा उत्पादन करती है जो उसे जानवरों की बस्ती में उन्हें अन्य प्रजातियों से अलग करता है परन्तु मानव उत्पादक क्षमताओं का बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है। उपयोगी वस्तु का उत्पादन करने के अलावा मानव ने अपना निजी इतिहास भी रचा है जो अपूर्व ही नहीं अपितु जहाँ तक मानव योग्यता के मूल्यांकन का सम्बन्ध है सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहसिक गाथा है। सभी वर्ग समाजों के दो प्रमुख विरोधाभासों में से एक मानव के बहुमत से इस मूल्यांकन को स्वीकार नहीं करता था कि वे मानव इतिहास के पन्नों में महत्त्वपूर्ण नायक हैं। विशिष्ट पहचान के रूप में मान्यता के लिए एक व्यापक न्यायनिर्णयन नितान्त आवश्यक है जो जीवन की समृद्धि और गुणवत्ता से जटिलता से जकड़ा हुआ है। यह शायद एक ऐसा संदेश है जो इक्कीसवीं शताब्दी की शुरुआत से पहले पूववर्ती सोवियत संघ, यूगोस्लाविया, प्रिटोरिया और ईराक आदि के पतन से स्पष्ट और प्रबल होता है कि : "अधिकार को मान्यता दिए जाने के अलावा उसके अतिरिक्त प्रत्येक बात परक्राम्य (बातचीत से तय की जाने वाली) है।'' इस शताब्दी में पुनर्वितरण और मान्यता मानव स्वतंत्रता के दो अविभाज्य घटक बन चुके हैं। इस प्रकार मानव संसाधन विकास की धारणा मानव क्रियाकलापों के मात्र अल्पांश पर लागू होती है तथा अधिंकांश इससे छूट जाता है।

19.2.3 मानव कल्याण अभिगम

इस अभिगम को आधुनिक लोकहितकारी राज्यों की परिपक्वता से लोकप्रियता मिली है। यह मानव के विकास की प्रक्रिया में भागीदारों की अपेक्षा विकास के हिताधिकारी के रूप में मानव पर अधिक केन्द्रित है। सरसरी तौर पर यह अभिगम सामान्य समृद्धि और आम की अच्छाई के हित में प्रतीत होता है। परन्तु इसके ढाँचागत तर्क पर आलोचनात्मक रूप से विचार करने पर प्रकट होता है कि विश्वभर में विभिन्न राज्यों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न लोकहितकारी उपाय अधिकांश से वैधता और सहमति प्राप्त करने के दबाव में तुरन्त लागू किए जाते हैं। यह प्रमुखत: फ्रांसीसी क्रांति के बाद का परिणाम था जब सामाजिक सत्ता के स्वरूप में रूपान्तरण देखा गया। इसके बाद सर्वशक्तिमान से आम आदमी की वैधता का युगान्तर हुआ जो बदले में वर्ग शासन के रूप में सामने आया। इसके बाद वर्ग शासन के साथ विश्व प्राधान्य नियंत्रण हुआ जिसमें ढाँचागत हिंसा द्वारा खुली तथा छोटी-छोटी शक्तियों के मिलन से अमानवीय शक्ति का इजहार हुआ। फलस्वरूप, इस नंगे अवशोषण से विश्वप्राधान्य नियंत्रण और सरकार बनाने का रास्ता खुल गया। अत: सर्वाधिक लोकहितकारी राज्य उस राज्य का द्योतक है जो अपनी जनता पर नियंत्रण के लिए ढाँचागत हिंसा और छोटी-छोटी शक्तियों का प्रयोग करता है। परिणामत: अधिंकाश को जो लोकहितकारी उपाय प्रतीत होते हैं वे विश्व प्राधान्य नियंत्रण के नितांत आवश्यक घटक और शासकीयता के पहलू हैं। लोकहितकारी उपायों के नाम पर विश्वभर में कई राज्यों द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधाएँ ढाँचागत नियंत्रण और शासकीयता के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं।

19.2.4 मौलिक न्यूनतम आवश्यकता अभिगम

यह सबसे महत्त्वपूर्ण परन्तु निर्ममता से विवादित अभिगमों में से एक अभिगम है। इसे आरंभ में अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा विकास प्रक्रिया की पर्याप्तता के उपाय के रूप में प्रस्तुत किया गया था। अन्तरराष्ट्रीयता श्रम संगठन ने छह मौलिक आवश्यकताओं की पहचान की है जिनके नाम हैं— स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जल आपूर्ति, स्वच्छता और गृह निर्माण। यह आधारभूत रूप से उन वस्तुओं, पण्यों और सेवाओं की मात्रा पर केन्द्रित रहता है जिनकी अभावग्रस्त जन समुदाय को आवश्यकता होती है न कि मानव प्रमुखताओं के मुद्दे पर। यह मानव विकास जैसे इस प्रकार के संवेदनशील और मानवीय मुद्दे के प्रति इस स्थूल सत्तात्मक अभिगम के कारण है जिसकी कइयों द्वारा आलोचना की गई हैं। इस अभिगम से उत्पन्न कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं :

- मूलभूत आवश्यकताओं का निर्धारण कौन करता है? क्या यह जनता, सरकार अथवा राज्य का अंग है? क्यों कोई कुछ ऐसी चीजें अवधारित कर सकता है तो जिन्हें जनता मूलभूत माने? उदाहरण के लिए, अन्तरराष्ट्रीय संगठन रोजगार को एक मूलभूत आवश्यकता मानता है; सिडनी वेव के अनुसार, इसमें

विश्राम काल शामिल है; चीन में शानदार शवयात्रा है तथा अन्य लोग सुरक्षा को मौलिक आवश्यकता मानते हैं।

- क्या मूलभूत आवश्यकता की धारणा व्यक्तिपरक अथवा वस्तुपरक है? यदि बाज़ार में किसी की प्रास्थिति के कारण मतभेद पैदा होते हैं तो उनका निराकरण कैसे किया जाए? आपूर्ति पक्ष के मद्देनज़र, परोक्ष रूप से जैसे भोजन, कपड़ा, मकान, जल और स्वच्छता जो बीमारी से रोकथाम के लिए आवश्यक है जैसी वस्तुओं, पण्यों तथा सेवाओं की विशिष्ट प्रमात्रा को मूलभूत आवश्यकता के रूप में माना जा सकता है। परन्तु मांग पक्ष की तरफ से, वस्तुओं के ऐसे गट्ठर को खरीदने में मतभेद हो सकते हैं जिस पर ऐसी सन्तुष्टि की पर्ची लगी हो जो प्रत्येक ग्राहक गट्ठर की वस्तुओं में महसूस करता है।

- क्या मूलभूत आवश्यकताएँ उन वस्तुओं और सेवाओं की विशिष्ट आवश्यकता शर्तों का हवाला देती है जो सम्पूर्ण, चिरायु और स्वरूप जीवन के लिए अवसर मुहैया कराती है। यह कल्पना करने का क्या आधार है कि उन उपभोक्ताओं, जिन्हें बाज़ार की पूरी जानकारी होती है, द्वारा अभिव्यक्त मूलभूत आवश्यकताएँ बाज़ार में उपलब्ध होती हैं तथा वे विज्ञापनों आदि के माध्यम से गलत सूचना के लालच से प्रभावित नहीं होते हैं। तथापि, इस बात को कैसे न्यायसंगत कहा जा सकता है कि मौलिक आवश्यकताओं का चयन उपभोक्ताओं की स्वतंत्र इच्छा और युक्तियुक्त पसन्द का परिणाम है तथा यह चयन दबाव, प्रलोभन, भय अथवा खुशामद आदि के तहत नहीं किया गया है।

- सहभागिता का क्या प्रयोजन है? यह किस रूप में की जानी चाहिए? सहभागिता (यदि यह मौजूद है) का अधिकार मूलभूत आवश्यकता उद्गम के दक्षतापूर्ण कार्यान्वयन के लिए आवश्यक राजनीतिक/प्रशासनिक ढाँचे से किस प्रकार सम्बन्ध रखता है? जनता की सहभागिता को उसकी शक्ति सम्पन्नता और समृद्धि के लिए प्रमुख प्रगतिशीलता के रूप में देखा जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या यह एक उपाय है अथवा अंत? सहभागिता क्यों करते हैं? क्या यह व्यक्तिगत संतुष्टि, कार्य की बड़े पैमाने पर उपलब्धि तथा उन परिणामों को बेहतर बनाने के लिए दक्षता प्रदान करती है जिसमें न्यूनतम लागत, सामुदायिक विकास अथवा पारस्परिक निर्भरता आदि शामिल हैं। इसी प्रकार, सहभागिता का स्वरूप और आकार कैसा होना चाहिए?

- विकास और मूलभूत आवश्यकता अभिगम तथा पुनर्वितरण अभिगम के बीच क्या सम्बन्ध है? क्या मूलभूत आवश्यकता अभिगम मूलचूल योजनाबद्ध परिवर्तन आवश्यक है अथवा यह उपशामक है? सहभागिता का अभिप्राय सर्वदा शक्तिसम्पन्नता अथवा लोकतांत्रिकता नहीं है। ऐतिहासिक अभिलेखों से सिद्ध होता है कि निरंकुश शासकों और तानाशाहों ने भी अत्यधिक अप्रजातांत्रिक साधनों के माध्यम से कार्यकर्त्ताओं, विद्यार्थियों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों की सहभागिता को प्रोत्साहित किया था। भारत में पंचायत राजतंत्र के क्रियाकलापों पर बी.आर. मेहता समिति रिपोर्ट की उपलब्धियों से भी यह सिद्ध हुआ कि निम्नस्तर पर शक्ति का हस्तांतरण देश में लोकतांत्रिक लोकाचार के प्रसार में अनुत्पादक सिद्ध हुआ है और इस प्रकार के शासनतंत्र ने ग्रामीण शक्तियों जिन्हें कार्य करने की अतिरिक्त शक्तिप्रदान की गई हो के प्राबाल्य को पुन: समेकित किया है। तथापि, अधिकांश चुनिंदा लोकतंत्रों का आम अनुभव है कि नेतृत्व मुश्किल से जनता का प्रतिनिधित्व करता है। अधिकांश नेता जो चुने जाते हैं, जोड़-तोड़ करते हैं तथा वे वास्तविक जन कार्यकर्त्ता न होकर सत्ता के दलाल होते हैं। वे वास्तविक जन आन्दोलन की बजाए जोड़-तोड़ करके नेताओं के रूप में उभरते हैं। पाश्चात्य लोकतंत्रों के अनुभव से भी सिद्ध होता है कि इन देशों में श्रमिक स्वेच्छाचारिता से श्रमिक वर्ग के आन्दोलनों पर अलाभकारी प्रभाव हुआ। इससे अलग इस अभिगम से पैदा होने निम्नप्रश्नों का उत्तर आवश्यक है :

- क्या मूलभूत आवश्यकताएँ स्वयमेव एक उपसंहार है अथवा वे मानव संसाधनों के विकास के लिए एक उपस्कर हैं?

- भूमंडलीकरण के इस दौर में मूलभूत आवश्यकताओं की लामबंदी में भूमंडलीकरण की शक्तियों और अन्तरराष्ट्रीय समर्थन की क्या भूमिका होगी?
- गरीबी उन्मूलन और आय की असमानताएँ कम करने के बीच क्या सम्बन्ध है?

ए.के. सेन मूलभूत आवश्यकता अभिगम के सर्वाधिक जोरदार समालोचकों में एक है। उसके अनुसार, आवश्यकता, संतुष्टि प्रसन्न्ता और पण्य आधारित अभिगम मात्र एक पक्षीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। मानव विकास एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है तथा वह इसकी 'अवसरों' और 'क्षमताओं' के सापेक्ष में संकल्पना करता है। पण्य एक ऐसे मूल लेख की तरह है जो अनेक आख्याओं और विनियोगों के लिए खुला रहता है। एक खाद्य की टोकरी जिसकी गुणवत्ता और प्रमात्रा दी गई है, विभिन्न उपभोक्ताओं के लिए विभिन्न महत्त्व रखती है। प्रदत्त खाद्य की टोकरी का प्रयोग और उपयोग लिंग, आयु, स्वास्थ्य, उपापचय की दर, उपभोक्ता के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य स्थिति (उदाहरण के लिए एक गर्भवती महिला और बच्चे को स्तनपान करने वाली माँ), कार्य करने के स्वरूप, कार्यस्थल की जलवायु, विभिन्न खाद्य सामग्री के पोषक मूल्य के बारे में जानकारी का स्तर और खाना पकाने के विभिन्न तरीकों के माध्यम से पोषण की हानि की दर पर निर्भर करेगा और यह सब उपभोक्ता की क्षमतानुसार अवधारित किया जाएगा। सेन यह तर्क भी देता है कि मानव विकास का निर्णय उसकी ऐसी स्वतंत्रता से नहीं किया जाता जो विभिन्न विकल्पों से किसी को भी ऐसा विकल्प चुनने का अधिकार देती है जो उसकी समृद्धि के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो। अपने तर्क के समर्थन में वह एक मोहताज भिखारी व्रत, रख रहे महन्त तथा भूख हड़ताल पर गाँधी का उदाहरण देता है उसके अनुसार, व्रत रख रहे महन्त और भूख हड़ताल पर गाँधी के पास क्षमताएँ होती है और वे अपना विकल्प चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। यह केवल मोहताज दरिद्र है जो अक्षम है और इसीलिए उसके पास मानव विकास का निम्नस्तर है।

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि मूलभूत आवश्यकता अभिगम की विद्वानों द्वारा कटु आलोचना की गई है तथा बहुत से विद्वानों ने मानव विकास को परिभाषित करने के लिए अधिक व्यापक अभिगम के पक्ष में अपने मत दिए हैं। सक्षमता, विकल्प और स्वतंत्रता ऐसे तीन अपरक्राम्य न्यूनतम स्वीकार्य मानदंड हैं जो कइयों द्वारा अवकथित हैं। परन्तु ये सभी किसी प्रकार सब को स्वीकार्य नहीं है। फॉसेस स्टीबर्ड ने सुझाव दिया है कि मानव विकास अधिक वस्तुपरक होना चाहिए और प्रेक्षणीय उपलब्धियों के सापेक्ष में निर्धारित किया जाना चाहिए न कि व्यक्तिपरक मानदण्डों जैसे प्रसन्नता, स्वतंत्रता और रुचियाँ आदि के परिप्रेक्ष्य में।

इन परिचर्चाओं, दावों और प्रतिदावों की पृष्ठभूमि में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) में मानव विकास को परिभाषित एवं संकल्पित करने का प्रयास किया गया था। यू.एन.डी.पी. ने अन्ततः 1990 में मानव विकास की अपनी परिभाषा और संकल्पना प्रस्तुत की।

19.3 मानव विकास की परिभाषा

यू.एन.डी.पी. का मानव विकास को निम्नवत् मानता है :

> *"जनता की रुचियों के बढ़ते हुए दायरे की प्रक्रियास्वरूप शिक्षा, स्वास्थ्य, देखभाल, आय और रोज़गार के लिए उनके अवसरों में वृद्धि करना तथा ठोस स्वास्थ्यप्रद पर्यावरण से लेकर आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता तक मानव रुचियों को पूर्णरूपेण शामिल करना।"*

कइयों के लिए ऐसी आम सहमति प्राप्त कर लेना बहुत ही आसान और सुगम है जिसमें मानव विकास जैसी धारणा की परिभाषा विकसित की गई हो परन्तु जहाँ तक यू.एन.डी.पी. का सम्बन्ध है यह एक सुगम और आसान सा प्रयास नहीं था। यू.एन.डी.पी. द्वारा तैयार की गई मानव विकास पर प्रथम रिपोर्ट में इसे निम्नवत् स्पष्ट किया गया था :

"यह रिपोर्ट जनता और इसके बारे में है विकास अपनी रुचियों में किस प्रकार वृद्धि करे। यह सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, आय तथा धन और पण्यों के उत्पादन पूँजी संचालन से अधिक है। आय के प्रति एक व्यक्ति की पहुँच उसकी रुचि हो सकती है परन्तु यह मानव व्यवहार का कुल जोड़ नहीं है।"

"मानव विकास जनता की रुचियों को बढ़ाने की प्रक्रिया है। इन व्यापक दायरे वाली रुचियों का सर्वाधिक आलोचनात्मक पहलू स्वस्थ और लम्बा जीवन, शिक्षाग्रहण करना तथा शानदार जिन्दगी जीने के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँच होना है। अतिरिक्त रुचियों में राजनीतिक स्वतंत्रता, अभिनिश्चित मानव अधिकार और व्यक्तिगत आत्मसम्मान शामिल है।"

दूसरे मूल मुद्दे जिनकी रिपोर्टों में चर्चा की गई, निम्नवत् हैं :

- विकास से जनता को ये रुचियाँ प्राप्त होती हैं यद्यपि कोई भी दूसरे को प्रसन्नता अभिनिश्चित नहीं कर सकता है।
- विकास का लक्ष्य होना चाहिए जनता के लिए लाभकारी पर्यावरण जिससे वे अपनी क्षमताओं का पूरी तरह विकास कर सकें और अपनी आवश्यकता और रुचियों के अनुरूप उत्पादक और सृजनात्मक जीवन के लिए युक्तियुक्त अवसर प्राप्त कर सकें।
- विकास में सुधरे हुए स्वास्थ्य और ज्ञान जैसी मानव क्षमताओं के गठन पर अधिक ध्यान देना चाहिए तथा हमारे सामाजिक जीवन के सभी संभावित क्षेत्रों में इन क्षमताओं को प्राप्त करने में ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।
- मानव विकास के लिए मानव स्वतंत्रता एक सजीव घटक है। जनता को अपनी रुचियों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- मानव विकास मात्र मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना ही नहीं है अपितु सहभागिता और गतिशील प्रक्रिया के रूप में मानव विकास करनी भी है। यह विकसित और विकासशील देशों, दोनों, पर लागू होता है।
- रिपोर्ट का अन्य और सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू था मानव विकास के कतिपय मुख्य सूचकों की पहचान, उनका मापन और विश्व के सभी देशों के लिए मानव विकास सूचकांक तैयार करना।

19.4 मानव विकास के सूचक और विकास प्रतिवेदन

विश्व स्तर पर, 'संयुक्त राष्ट्र' विकास कार्यक्रम सभी देशों के लिए मानव विकास प्रतिवेदन तैयार करने के लिए एक सर्वोत्कृष्ट निकाय था। यह महसूस किया गया था कि एकमात्र मानदण्ड अर्थात् सकल घरेलू उत्पाद पर उसे तुलनात्मक आधार पर लागू किए गए जाने के कारण बहुत-सी सीमाएँ थीं। बहुत से विद्वानों ने अधिक व्यापक सामाजिक-आर्थिक उपाय की ओर ध्यान दिया क्योंकि उनका विश्वास था कि :

"मानव विकास जनता से सम्बन्ध रखता है – और इस बात से सम्बन्धित है कि विकास के दौरान उसकी रुचियों में किस प्रकार वृद्धि होती है। यह सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि से अधिक, और धन से अधिक तथा पण्यों के उत्पादन तथा पूँजी संचय से अधिक के विषय में है। आप तक पहुँच किसी एक व्यक्ति की रुचि हो सकती है परन्तु यह मानव प्रयास का कुल जोड़ नहीं है।"

1990 का प्रतिवेदन इस दिशा में प्रथम प्रयास था। इस प्रतिवेदन में मानव जीवन के तीन आवश्यक घटकों का पता चला: **दीर्घ आयु, ज्ञान और शालीन जीवन स्तर**।

दीर्घ आयु

जन्म के समय दीर्घायु की कामना दीर्घायु को मापने का सूचक है। दीर्घायु की कामना के लिए सैद्धान्तिक न्यायसंगतता इस आत्मविश्वास में निहित है कि मानव जीवन सर्वाधिक कीमती है और लम्बा जीवन सभी मानवीय उपलब्धियों में मूल्यविहीन है, यह साधन और अन्त दोनों हैं। दीर्घायु पर्याप्त पोषण, अच्छी सेहत और व्यक्तिगत सुरक्षा से निकट से जुड़ी हुई है।

ज्ञान

ज्ञान ही शक्ति है। यह एक पुरानी कहावत है। साक्षरता सीखने और ज्ञानवर्द्धन में व्यक्ति का प्रथम कदम है। अत: एक साक्षर व्यक्ति बिना पढ़े लिखे व्यक्ति की तुलना में सत्ता के पास अधिक पहुँच रखता है। तथापि, सूचना प्रौद्योगिकी के युग में साक्षरता का महत्त्व और बढ़ गया है क्योंकि इसे व्यक्ति की उपलब्धि नहीं माना जाता अपितु, यह किसी के अस्तित्व का आधार है।

शालीन जीवनस्तर

यह एक स्वीकृत तथ्य है कि शालीन जीवनस्तर के लिए संसाधनों पर नियंत्रण आवश्यक है परन्तु इसकी माप करना बहुत मुश्किल है। सर्वाधिक तुरन्त उपलब्ध सूचक प्रतिव्यक्ति आय है। परन्तु इसका राष्ट्रीय विस्तार क्षेत्र व्यापक है और इसमें बहुत-सी अन्य गंभीर विसंगतियों के साथ-साथ विभिन्नताएँ हैं। अत: प्रतिव्यक्ति क्रयशक्ति – समायोजित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद से सापेक्ष शक्ति का बेहतर अनुमान लग जाता है जिससे पण्यों की खरीद तथा उच्च मानक जीवनस्तर के लिए संसाधनों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

यह समझा जाता है कि उपरोक्त तीनों सूचकों की गंभीर सीमाएँ हैं जो औसतों जिन पर यह आधारित है के विशाल पैमाने पर सामान्यीकरण के स्तर के कारण है। ये औसत बिकनी की तरह हैं जो प्रकट करने योग्य को छिपाती है और छिपाने योग्य को प्रकट करती है। उसी समय ये क्षेत्रीय, लैंगिक, ऐतिहासिक और वर्ग मतभेदों जो इन सूचकों के मापन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं, के प्रति भी कम संवेदनशील हैं। तथापि, वृद्धि के विरुद्ध मानवीय विकास की प्रास्थिति के लिए इसकी आलोचना भी की गई है। यह क्षेत्रीय अपितु समग्र वृद्धि पर अधिक जोर देता है और इसका गरीब देशों के प्रति झुकाव विकसित देशों के मामले में इसकी प्रयोगिकता को न्यूनतम कर देता है।

यद्यपि, मानव विकास की समग्र संकल्पनाशीलता और परिभाषाओं में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ तदपि 1992 के प्रतिवेदन में विशेष ध्यान मानव विकास को किन्हीं अन्य महत्त्वपूर्ण संघटकों से जोड़ने पर दिया गया था। इन संसाधनों में स्थायी विकास की धारणा, प्रतिस्पर्द्धात्मक और दक्षतापूर्ण बाज़ारों के माध्यम से सभी लोगों की सृजनात्मक ऊर्जाओं को प्रकट करना तथा ऐसी विभेदकारी व्यापार नीतियाँ विशेष रूप से विकसित देशों जो अमीर ओर गरीब देशों के बीच विसंगतियाँ और विकासशील देशों में मानव विकास निम्नस्तर बनाए रखने के लिए सर्वाधिक जिम्मेवार है, द्वारा अपनाई गई आव्रजन नीति शामिल थी। इस प्रतिवेदन के विशेषरूप से उल्लेखनीय तथ्य निम्नवत् थे :

> *"हाल के दशकों के महान् पाठों में से एक पाठ यह है कि मानव विकास के लिए प्रतिस्पर्द्धात्मक बाज़ार सर्वोत्तम गारण्टी हैं। वे सृजनात्मक उद्यमों के लिए अवसर प्रदान करते हैं तथा सम्पूर्ण आर्थिक रुचियों तक जनता की पहुँच में वृद्धि करते हैं।"*

अमीर देशों द्वारा अनुमानित विभेदकारी और कम प्रतिक्रियात्मक अभिगमों को भी मान्यता दी गई थी। प्रतिवेदन में चर्चा की गई है कि :

"यह एक कठोर निर्णय है कि लोक उद्यमों को निजीकरण के लिए खोला जा रहा है। उपभोक्ता मांगें केन्द्रीकृत नियोजन को प्रतिस्थापित कर रही है और भूमंडलीय बाज़ार सीमित है। विकसित देश गरीब देशों के उत्पादों के लिए अपने बाज़ार नहीं खोल रहे हैं।"

इस प्रकार, इस प्रतिवेदन में बाजार और मानव विकास को एक-दूसरे के साथ जोड़ा गया था अन्तिम तीन सालों के प्रतिवेदन और 1993 में प्रकाशित प्रतिवेदन से हटकर कुछ युगान्तरण हुआ था। 1993 के मानव विकास और प्रतिवेदन में जनता की सहभागिता और सुरक्षा मुख्य मुद्दे थे। इसमें मानव विकास के लिए न्यूनतम शर्तों के रूप में प्रगतिपूर्ण लोकतंत्र और जनता के शक्तिवर्द्धन पर भी बल दिया गया था। प्रतिवेदन से पता चला कि **'विकास जनता के चारों तरफ किया जाना चाहिए न कि विकास के चारों तरफ जनता''**। यह बताया गया था कि विकास की शक्ति जनता की शक्ति में सन्निहित है। प्रतिवेदन में शान्ति लाने और मानव विकास करने में **"सिविल सोसाईटियों"** की बेहतर रचनात्मक भूमिका को मान्यता दी गई थी। प्रतिवेदन के अनुसार "एक स्पन्दनशील और जागरूक समाज को राष्ट्र की अपेक्षा व्यक्ति की सुरक्षा पर अधिक बल देना चाहिए''। इसे सैनिक खर्च में कटौती, सशस्त्र सेनाओं के वियोजन, रक्षा से हटकर मौलिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन तथा विशेष रूप से निरस्त्रीकरण और विकसित देशों द्वारा नाभिकीय युद्धों में कमी आदि के लिए मत निर्माण हेतु कार्य करना चाहिए। नाभिकीकृत विश्व में शान्ति और समृद्धि मुख्य भूमंडलीय चिन्ताएँ हैं। जब तक विशाल पैमाने पर विनाश की आशंकाएँ हमारे सिर पर मँडरा रही हैं, असुरक्षा और आशंकाएँ विश्वभर में शान्ति, सद्भावना और साथी मानव के प्रति सहानुभूति प्रकट नहीं होने देंगी। इसमें इसकी भी स्वीकोक्ति हुई कि तानाशाही और सैनिक शासक मानव विकास के लिए महानतम् ख़तरे हैं। इसके प्रतिकूल संवेदनशील समाज शान्ति और मानव विकास के लिए अपेक्षाकृत बेहतर अवसर सुनिश्चित करता है।

1993 के प्रतिवेदन में जिस युगांतरण की अवधारणा की गई थी उसे 1994 और 1995 के प्रतिवेदनों में समेकित कर दिया गया था। स्थायी विकास एक नया आलाप था। इसने स्वयं जीवन को नया अर्थ दिया। प्रतिवेदन में चर्चा थी, **''यह जीवन का मूल्यांकन नहीं करता है क्योंकि यह भौतिक सामान का उत्पादन करता है परन्तु यह स्वयं मानव जीवन का मूल्यांकन करता है''**। इसने सभी प्रकार के विभेदनों को समाप्त करने के लिए शुरुआती स्वीकारात्मक कदम बढ़ाए। 1994 के मानव विकास पर प्रतिवेदन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू कार्यप्रणाली और विभिन्नता से सम्बन्धित मानव विकास के सूचकांक के निर्माण में धारणागत परिवर्तन थे।

"कोई बच्चा लघु जीवन और मायूस जीवन के लिए मात्र इसलिए निर्दिष्ट नहीं होना चाहिए कि उस बच्चे ने गलत वर्ग अथवा गलत देश अथवा गलत लिंग से जन्म लिया है।'' इसमें उन सुरक्षा तंत्रों का ब्यौरा भी दिया गया है जो विश्वव्यापी जीवन के लिए ख़तरा बने हुए हैं तथा प्रत्येक प्रकार की सुरक्षा जैसे आर्थिक, भोजन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, वैयक्तिक, समुदायिक और राजनीतिक सुरक्षा का सुझाव दिया है। तथापि, अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद को भी पहली बार मानव समृद्धि और मानव विकास के लिए महत्त्वपूर्ण ख़तरे के रूप में मान्यता दी गई थी।

1995 के मानव विकास प्रतिवेदन का प्रकरण लिंग समानता था। सभी को समान अवसर विशेषत: औरतों का समान अवसर मुख्य चिंता का विषय था। यह चर्चा की गई थी कि, **''मानव विकास को यदि जन्म न हो तो वह ख़तरा बन सकता है''**। प्रतिवेदन की उपलब्धियाँ आश्चर्यजनक परन्तु सच थीं। प्रतिवेदन में दी गई कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ निम्नवत् हैं :

- *''गरीबी का चेहरा नारी का चेहरा होता है''* – मोटे तौर पर विश्व में 70 प्रतिशत नारियाँ गरीबी में जीवनयापन कर रही हैं।
- लिंग समानता दूर करने का राष्ट्रीय आय से कुछ लेना देना नहीं है।
- जहाँ शिक्षा और स्वास्थ्य के अवसर नारियों के लिए तेजी से उपलब्ध है वहीं आर्थिक और राजनीतिक अवसरों के द्वार मुश्किल से आधा खुल पाए हैं।
- नारियाँ बैंकिंग संस्थाओं से कुल श्रेय का अपेक्षाकृत कम हिस्सा प्राप्त करती हैं। यह लैटिन अमेरिका के मामले में 7-11 के प्रतिशत में निम्नस्तर तक है।

- सभी क्षेत्रों में नारियों की बेरोजगारी दर अधिक है।
- विकासशील देशों में नारियाँ प्रशासन और प्रबंधन कार्यों में मात्र 1/7वाँ हिस्सा हैं।
- नारियाँ संसद में 10 प्रतिशत तथा कैबिनेट मंत्रियों के रूप में मात्र 7 प्रतिशत पर आसीन हैं।
- 55 देशों में संसद में या तो कोई नारी नहीं हैं अथवा इनकी प्रतिशतता 5 प्रतिशत से कम है।
- अनदेखा करने के प्रमुख सूचकांक से पता चलता है कि नारियों द्वारा अर्थव्यवस्था में दिए गए अधिकतर अंशदानों का समग्र रूप से या तो कम मूल्यांकन किया जाता है अथवा बिल्कुल मूल्यांकन नहीं किया जाता। इस प्रकार की चूक प्रतिवर्ष 11 अरब डॉलर तक है।
- नारियों के विरुद्ध विभेदन तथा उनका अवमूल्यांकन उनके जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है। यह जीवन के आरंभ से प्रारंभ होकर जीवन के अंत तक बना रहता है। बारबाडोस, कनाडा, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, नार्वे और संयुक्त राज्य अमेरिका में एक तिहाई नारियाँ अपने बचपन में ही लैंगिक दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं। एशिया में 1 अरब से अधिक बच्चे जिनमें अधिकतर लड़कियाँ हैं प्रतिवर्ष वैश्यावृत्ति के लिए मजबूर की जाती हैं।
- नारियों के प्रति हिंसा विवाहोपरान्त जारी रहती है। कुछ देशों में दो-तिहाई विवाहित नारियाँ घरेलू हिंसा का शिकार हैं। कभी-कभी यह हिंसा बलात्कार के रूप में सामने आती हैं। कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, न्यूजीलैण्ड और ब्रिटेन में प्रत्येक 6 नारियों में से एक नारी अपने जीवनकाल में बलात्कार का शिकार होती हैं। कभी-कभी इसका अंत हत्या अथवा आत्महत्या के रूप में होता है।

तथापि, 1995 के मानव विकास पर प्रतिवेदन का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू विभिन्नता से सम्बन्धित कार्यप्रणाली और मानव विकास सूचकांक के निर्माण में धारणागत परिवर्तन थे। इस प्रतिवेदन में दो परिवर्तन किए गए थे।

पहला परिवर्तन ज्ञान और जागरूकता के स्तर से सम्बन्धित था। 1994 तक साक्षरता के स्तर के प्राक्कलन के लिए सूचक के रूप में स्कूल जाने की औसत आयु का स्थान संयुक्त, प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्तर के पंजीकरण अनुपात ने लिया था।

दूसरा परिवर्तन आय का न्यूनतम मूल्य प्रतिव्यक्ति 200पीपीपी डॉलर से घटाकर 100पीपीपी डॉलर कर दिया गया था।

अंततः प्रतिवेदन का उपसंहार था कि यदि आधी मानवता लैंगिक विभेदन से त्रस्त है तो मानव विकास की बात करना बकवास ही नहीं अपितु लैंगिक हिस्सा करने जैसा है। प्रतिवेदन में इस स्थिति को पूरी गंभीरता से लिया गया और मानव विकास सूचकांक के साथ-साथ लिंग निरपेक्ष संवेदना सूचकांक अथवा लिंग सम्बन्धी विकास सूचकांक परिकलित करने की प्रक्रिया आरंभ की।

तत्पश्चात् वर्ष में प्रकाशित प्रतिवेदन ने आर्थिक वृद्धि के मुकाबले मानव विकास को अधिक महत्त्व दिया। इस की मान्यता थी कि, "मानव विकास अंतिम लक्ष्य है तथा आर्थिक विकास उपाय"। परन्तु इसमें यह चेतावनी भी दी गई कि इन दोनों के बीच कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। वस्तुतः, अन्तिम 15 वर्षों के निष्पादन के आधार पर प्रतिवेदन का उपसंहार था कि कुछ देशों में विकास में प्रत्याशित वृद्धि हुई परन्तु कुछ देशों ने अप्रत्याशित पतन दर्ज किया। परिणामस्वरूप, विसंगतियों में वृद्धि हुई है जिससे एक अन्यथा एक-ध्रुवीय विश्व में दो एकदम प्रतिकूल विश्वों का प्रादुर्भाव हुआ। इससे यह भी पता चला कि 1993 में 23 खरब डॉलर भूमंडलीय सकल घरेलू उत्पाद में से 18 खरब डॉलर विकसित देशों में थे तथा मात्र 5 खरब डॉलर विकासशील देशों में थे। यद्यपि पूर्ववर्त्ती स्थिति में विश्व की 80 प्रतिशत जनसंख्या शामिल थी। इसने चेतावनी दी कि मानव विकास में अल्पकालिक प्रगतियाँ संभव हैं परन्तु वे आगे वृद्धि के बिना टिक नहीं सकती। विलोमतः, मानव विकास के बिना आर्थिक वृद्धि स्थायी नहीं हो सकती।

1991 में प्रतिवेदन में गरीबी उन्मूलन को मानव विकास के लिए आवश्यक कदम के रूप में माना गया। इसके केन्द्र में मात्र गरीबी की परिभाषा से व्यापक रूप से सहमत होने के अलावा जैसाकि 1990 के मानव विकास प्रतिवेदन में कहा गया था, इस प्रतिवेदन में "राजनीतिक स्वतंत्रता, मानव अधिकार और आत्म सम्मान'' की अतिरिक्त रुचियाँ शामिल थीं जिनमें आदम स्मिथ की उक्ति'' सार्वजनिक रूप से बिना किसी धर्म के सबके साथ मिल जाने की योग्यता'' को मानव विकास के संघटक के रूप में सम्मिलित किया गया था। इसने आलोचनात्मक रूप से गरीबी के तीन पहलुओं पर दृष्टिपात किया :

- आय परिप्रेक्ष्य,
- मूलभूत आवश्यकता परिप्रेक्ष्य, और
- सक्षमता परिप्रेक्ष्य।

इस प्रतिवेदन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू दुर्व्यवहार के मानदण्ड को रेखांकित करना था जो क्षमता निर्माण और समृद्धि के मापन के निर्धारण के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इनमें निम्नवत् शामिल हैं :

— अक्षम (अंधा, अपंग, मानसिक रूप से अक्षम और दीर्घकालिक मरीज) होना,

— भूमि, पशु, खेती के उपस्कर, पिसाई मिल आदि की कमी,

— अपने मृतक सम्बन्धियों को दफनाने की अक्षमता,

— अपने बच्चों को स्कूल भेजने की अक्षमता,

— खिलाने के लिए अधिक मुँह तथा सहायता के लिए कम हाथ होना,

— परिवार में सक्षम सदस्यों की कमी जो आपात्काल में उनके परिवार का भरण पोषण कर सकें,

— विनाशकारी आदतों (जैसे शराब, मदिरा आदि का सेवन) के प्रभावों से पीड़ित होना,

— 'विवश जनता' को सामाजिक समर्थन न मिलना,

— बच्चों को रोज़गार पर रखना,

— माता-पिता में से एक होना,

— निम्नस्तरीय कार्य को स्वीकार करना,

— साल के कुछ महीनों के लिए भोजन संरक्षण,

— साझा सम्पत्ति संसाधनों पर निर्भर रहना।

इस प्रतिवेदन का महत्त्वपूर्ण लक्षण था कि विकसित तथा विकासशील देशों के लिए क्रमश: मानव गरीबी सूचकांक-1 और सूचकांक-2 तैयार करना। यह मानव जीवन के तीन संघटकों से अपवचन पर केन्द्रित था - दीर्घायु, ज्ञान और उच्च मानक जीवनस्तर जिन्हें मानव विकास सूचकांक में पहले ही समझाया जा चुका है। यह अपवचन निम्न तीन सूचकों से संबंधित था।

- उत्तर जीवन सम्बन्धी अभाव – अपेक्षाकृत जल्दी उम्र में मौत की आशंका;
- ज्ञान संबंधी – पठन और संचार की दुनिया से बहिष्कार;
- गरीबी रेखा से नीचे उच्च जीवनस्तर संबंधी।

1948 का प्रतिवेदन पूर्व प्रतिवेदनों के मुकाबले एक से अधिक अर्थों में भिन्न था। सभी पूर्व प्रतिवेदनों में चिन्ता के मुख्य विषय खपत को बढ़ाने और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर केन्द्रित था। इस प्रतिवेदन में कुछ देशों द्वारा जो विश्वभर में समृद्धि के निम्नस्तर के लिए उत्तरदायी थे, खपत के अवैध तरीकों पर दोष लगाया गया। इस प्रकार, इसमें कल के मानव विकास के लिए आज के खपत के तरीके को बदलने पर बल दिया गया। प्रतिवेदन में विशेष रूप से उल्लेख है कि विश्व की खपत 20वीं शताब्दी तक अप्रत्याशित रूप से बढ़कर 25 खरब डॉलर तक पहुँच गई जो 1975 में 12 खरब डॉलर, 1960 में 4 अरब डॉलर तथा 1900 में 1.5 खरब डॉलर थी। खपत मानव विकास के लिए एक आवश्यक साधन है परन्तु इसका सम्बन्ध स्वयमेव नहीं है। भूमंडलीय खपत के वर्तमान दौर से पता चलता है कि यह विकसित देशों में अधिक हुई जिससे विकासशील देशों में समृद्धि का स्तर मुख्यत: निम्न कारणों से प्रभावित हुआ है :

- अमीरों द्वारा खुल्लम खुल्ला और अवैध खपत से पण्य बाज़ार में पण्य की दुर्लभता की स्थिति बन गई है जिससे पण्यों के मूल्य ऊपरी तौर पर इतने बढ़ गए हैं जिससे वे आम आदमी की पहुँच से बाहर हैं।
- इससे केवल वर्तमान में ही कमी नहीं आई अपितु भावी पीढ़ियों के लिए स्थिति और अधिक बिगड़ने की संभावना है।
- वर्तमान खपत प्रतिदर्श मानव विकास के प्रतिकूल हो चुके हैं क्योंकि ये पर्यावरण संरक्षण आधार की ओर ध्यान नहीं दे रहा हैं। अत: भावी पीढ़ियों की उम्मीदें अपंग हो रही हैं।
- इसके फलस्वरूप स्थान तथा पीढ़ियों की असमानताएँ बढ़ती जा रही हैं।
- खपत – गरीबी-असमानता-पर्यावरणीय अधोपतन के बीच एक प्रबल सम्बन्ध विद्यमान है।
- पर्यावरण प्रदूषण, परिस्थितिजन्य संकट खपत से स्वभावत: सम्बन्धित है।
- स्थायी विकास उत्पादन प्रौद्योगिकी में परिवर्तन पर आधारित होना चाहिए।
- खपत प्रतिदर्शों में परिवर्तन के लिए, विकसित देशों द्वारा अपने उत्पादकों को दी जा रही आर्थिक सहायता में कमी आवश्यक है।
- स्थायी विकास के लिए मानसिक स्थिति में परिवर्तन आवश्यक है। 21वीं शताब्दी में मानव विकास का मूलमंत्र "चिंतन विश्व का और कार्य स्वयं का" में निहित है।

20वीं शताब्दी की पराकाष्ठा अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में भूमंडलीकरण के समेकन की साक्षी थी। अत: इसका अनुपालन करने का सर्वोत्तम तरीका इसके मानवीय आयाम पर बल देना था। यद्यपि भूमंडलीकरण अब एक नया घटनाक्रम नहीं है, फिर भी हाल की परिस्थितियाँ एक उपयुक्त लक्षण हैं। बर्लिन की दीवार के गिरने तथा लौह पट के पतन के पहले समाजवादी विश्व के एक बड़े भाग का अन्त ही नहीं हुआ, अपितु इससे स्थान, समय का संकुचन तथा सीमाओं की समाप्ति भी हुई। ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो विश्व सिकुड़कर एक छोटा-सा भूमंडलीय गाँव बन गया है जिसमें जनता का जीवन अधिक अर्थपरक, गहन और त्वरित हो गया है जैसा पहले कभी नहीं था। भूमंडलीकरण मानव प्रगति के लिए नए अवसर प्रदान करता है परन्तु इसका लाभ उन्हीं को मिल सकता है जिनका शासन सुदृढ़ हो अर्थात् जो नए बाज़ार, नए औजार और तकनीकी, नए कार्यकर्त्ता, नए नियम और अन्तत: नए लोगों से सुसज्जित हो। यह भूमंडलीकरण का युग है जहाँ केवल शक्तिशाली को बने रहने का अधिकार है। भूमंडलीय स्पर्धा का भयानक और अदमनीय दबाव मानव विकास के अदृश्य दिल को दबा रहा है। अत: इसके समग्र सुरक्षा पर्यावरण पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसलिए प्रतिवेदन में मानव विकास को मानवीय चेहरा मुहैया कराने की आवश्यकता पर विचार किया गया।

2000 का प्रतिवेदन मानव अधिकार, स्वतंत्रता और समेकन के प्रति ऐसी प्रबल वचनबद्धता के साथ आगे बढ़ा जिस पर कोई सामंजस्य न हो तथा जिससे भूमंडलीकरण मानवीय स्पर्श के सम्पर्क में रहे। इसमें कहा गया था कि मानव अधिकार और मानव विकास प्रत्येक जगह जनता की स्वतंत्रता, समृद्धि और प्रतिष्ठा के अभिरक्षण के लिए समान दृष्टि और समान प्रयोजन वाले हैं।

इसमें निम्नलिखित की बात की गई थी :

- लिंग, जाति, प्रजाति, राष्ट्रीयता, उद्गम और धर्म के विभेदन से स्वतंत्रता;
- व्यक्तिगत सुरक्षा को भय की आशंका, प्रपीड़न, स्वैच्छिक गिरतारी तथा अन्य हिंसात्मक कार्यों से स्वतंत्रता;
- मानव क्षमताओं के विकास और उसे महसूस करने की स्वतंत्रता;
- अन्याय और कानून के नियम के उल्लंघन से स्वतंत्रता;
- विचार और संभाषण तथा निर्णय लेने और संगठन बनाने में सहभागिता की स्वतंत्रता; और
- शोषण के बिना श्रेष्ठ कार्य करने की स्वतंत्रता।

इस प्रतिवेदन में मानव विकास की एक परिवेष्टित परिभाषा को भी विकसित करने का प्रयास किया गया है। मानव विकास का अर्थ है :

> *"एक उच्च जीवनस्तर के लिए संसाधनों तक पहुँच होना। परन्तु मानव विकास के क्षेत्र को रुचियों के उन अन्य क्षेत्रों तक बढ़ाया जा सकता है जिनका उचित मूल्यांकन किया गया है। इन क्षेत्रों में सहभागिता, सुरक्षा, स्थायित्व, अभिनिश्चित मानव अधिकार जिनकी रचनात्मक और उत्पादक होने के कारण तथा आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए सभी को आवश्यकता है, शक्ति सम्पन्नता और एक समुदाय से सम्बन्धित होने का बोध शामिल है।"*

और अंत में मानव विकास को एक वाक्य में परिभाषित किया जा सकता है – "जनता का विकास, जनता के लिए और जनता द्वारा"।

2001 के मानव विकास प्रतिवेदन में मानव विकास को प्रौद्योगिकी से जोड़ने की कोशिश की गई। इसमें स्वीकारोक्ति थी कि प्रौद्योगिक नेटवर्क विकास के परम्परागत नक्शे का रूप बदल रहे हैं। यह जनता के अनुभव स्तर का विस्तार कर रही है और ऐसी क्षमताओं का सृजन कर रही है जिससे एक दशक की प्रगति एक सप्ताह के काल में प्राप्त की जा सके जिसकी पूर्व पीढ़िया गत समय में अपेक्षा करती थी। परन्तु प्रौद्योगिकी एक दुधारी तलवार है। दूसरे शब्दों में यह एक अच्छी नौकर परन्तु निरंकुश मालिक है। प्रथमत: विश्व के कुछ शक्तिशाली देशों द्वारा इसके प्रयोग और इस पर नियंत्रण है जिससे अन्य अनेक देश स्थायी पराधीनता की स्थिति से पराभव हुए हैं और किसी राष्ट्र के गुलाम बन गए हैं ऐसे देश, समुदाय और व्यष्टि जिनकी गतिधीमी है और जो प्रौद्योगिकीयधारण के प्रापिक सिरे पर अप्रचलन और फालतूपन की आशंका से लगातार ग्रसित है, अन्तत: तीव्र गति से बदल रहे विश्व में स्थायी तौर पर अयोग्य हो जाते हैं। इससे व्यक्ति के बीच समृद्धि और आत्मसम्मान का भाव गंभीरता से प्रभावित होता है।

2002 का प्रतिवेदन मानव विकास को नया आयाम देता है। यह रणनीति और मानव विकास विषयक है। यह बताता है कि राजनीतिक सत्ता और संस्थान – उचित अथवा अनुचित, राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय जो भी हों किस प्रकार मानव प्रगति को नया रुख देते हैं। इसमें बिखरे हुए विश्व लोकतंत्रों को मजबूत बनाने के बारे में चिंतन किया गया है। इस प्रतिवेदन के अनुसार लोकतंत्र जो जनता को शक्तिसम्पन्न बनाता है, जनता के विश्वास और संसाधनों पर निर्मित किया जाना चाहिए और इसे वापस नहीं किया जा सकता। यह विश्वभर

में व्याप्त लोकतंत्र के एक स्वरूप के विरुद्ध है। "लोकतंत्र जिसे कोई राष्ट्र अपने विकास के लिए चुनता है उसके इतिहास, और परिस्थितियों पर निर्भर करता है तथा ऐसे देश अवश्यमेव विशिष्ट प्रकार के प्रजातांत्रिक देश होंगे।'' मतभेद का सम्मान लोकतंत्र और विकास का हृदय होता है।

2003 का प्रतिवेदन "शताब्दी विकास लक्ष्य : मानव गरीबी को समाप्त करने के लिए राष्ट्रों में साँठ-गाँठ'' नियत करके एक जोरदार शुरुआत करता है। राज्यों के प्रमुखों द्वारा की गई घोषणा के अनुसार, यह सभी देशों के लिए बाध्यता है कि, "अपर्याप्त आय, बहुव्याप्त भूख, लिंग, असमानता, पर्यावरणीय गिरावट तथा शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य जागरूकता और स्वच्छ जल पर हमला किया जाए। उन्होंने ऋण को कम करने तथा आर्थिक सहायता बढ़ाने, व्यापार तथा गरीब देशों को प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के कार्यों को भी शामिल किया है।'' कुछ महत्त्वपूर्ण शताब्दी विकास लक्ष्य और ध्येय जिन्हें प्रतिवेदन में रेखांकित किया गया है निम्नवत् है :

लक्ष्य	ध्येय
अत्यधिक गरीबी तथा भूख का उन्मूलन	1990 और 2015 के बीच ऐसे लोगों की संख्या में 50 प्रतिशत की कमी जिनकी आय 1 डॉलर से कम है।
	भूख से त्रस्त लोगों की संख्या में भी उसी प्रतिशतता से कमी।
सार्वभौमिक तौर पर प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना	यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चे 2015 प्राथमिक शिक्षा तक पूरी कर लेंगे।
लिंग समानता को प्रोत्साहित करना तथा नारियों को शक्ति सम्पन्न बनाना	प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में 2005 तक तथा सभी स्तरों पर 2015 तक लिंग असमानता को समाप्त करना।
शिशु मृतक दर में कमी लाना	1990-2015 के बीच 5 वर्षों से छोटे बच्चों की मृतक दर दो-तिहाई तक कम करना।
माँ के स्वास्थ्य में सुधार करना	1990-2015 तक माँ मृतक दर का अनुपात तीन चौथाई तक कम करना।
एच आई वी/एड्स मलेरिया और अन्य बीमारियों का मुकाबला करना	एच आई वी/एड्स के मामले में 2015 तक रोक लगाना।
	मलेरिया और अन्य बीमारियों की 2015 तक रोकथाम।
पर्यावरणीय स्थायित्व सुनिश्चित करना	पर्यावरणीय नीतियाँ बनाना जिससे राष्ट्रीय नियोजन का आधार बने और पर्यावरणीय पतन की प्रक्रिया को उलट देना।
	उन लोगों का अनुपात 50 प्रतिशत करना जिनकी स्वच्छ पेय जल तक स्थायी पहुँच नहीं है।
	2020 तक गन्दी बस्तियों में रहने वाले 1 अरब प्राणियों की दशा में सुधार करना।

भूमंडलीय सहभागिता और विकास को बढ़ावा देना	एक मुक्त, ग्रामीण आधारित अविभेदकर व्यापार तंत्र को विकसित करना।
	न्यूनतम विकसित देशों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना।
	सीमित भूमि वाले देशों और लघु द्वीप राज्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना।
	विकासशील देशों की ऋण समस्याओं को व्यापक रूप से हल करना।
	नौजवानों के उत्पादक रोजगार के लिए विकसित देशों से सहयोग लेना।
	गरीब देशों को सस्ती और आवश्यक औषधियों का प्रावधान करना।
	नए उत्पादन और सूचना प्रौद्योगिकी को फैलाने के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहभागिता करना।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रस्तुत मानव विकास प्रतिवेदनों पर वार्त्तालाप और उनके रंगभेद सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि प्रतिवेदन में उन सभी संभावित पहलुओं को शामिल करने का प्रयास किया गया है जो विश्वभर में मानव विकास और समृद्धि की चिंता का विषय रहे हैं। प्रतिवेदन में उन नई चुनौतियों के बारे में भी जानकारी करने का प्रयास किया गया है जो विश्वभर में मानव समृद्धि, शांति, सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिए खतरा हैं। परन्तु यह तथ्य चौंकाने वाला है कि अन्तिम मानव विकास सूचकांक के परिकलन के लिए मात्र तीन सूचकों का चयन किया गया था।

पहले यह भी चर्चा की जा चुकी है कि यू.एन.डी.पी. बहुआयामी घटनाक्रम जैसे मानव विकास के मापन के लिए और अधिक तथा सुसंगत सूचकांकों के महत्त्व से पूरी तरह भिज्ञ थे। प्रतिवेदन में इसे यथासंभव सुसंगत बनाने का प्रयास किया गया है। तथापि, इसने मात्र तीन सूचकांक दीजिए। यू.एन.डी.पी. में इसके लिए दिया गया औचित्य निम्नवत् है :

> *"मानव अनुभव के सभी पहलुओं को प्रतिबिम्बित करना आदर्श स्थिति है। आँकड़ों की कमी इस पर कुछ प्रतिबंध लगाती है, और शायद इसके और सूचकांक जोड़ने होंगे जिससे सूचना उपलब्ध हो सके। परन्तु अधिक सूचकांक अवश्यमेव बेहतर नहीं होंगे, कुछ विद्यमान सूचकांकों पर अधिभावी होंगे जैसे शिशु मृतक दर जीवन की उम्मीद में पहले ही प्रतिबिंबित होती है। और अधिक चर जोड़ देने से चित्र और भ्रमित करेगा तथा मुख्य लक्ष्य से हटा देना।"*

सूचकांकों के चयन के बाद सबसे निर्णायक पहलू है मानव समृद्धि के स्तर के सापेक्ष में प्रत्येक देश का निष्पादन मापने के लिए मानव विकास सूचकांक तैयार करना। इस प्रयोजनार्थ, मानव विकास सूचकांक तैयार करना सबसे महत्त्वपूर्ण और निर्णायक पहलू है।

19.5 मानव विकास सूचकांक का परिकलन

जैसी कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि 1995 के प्रतिवेदन में मानव विकास के मापन के लिए सूचकांकों के चयन में कुछ परिवर्तन किए गए थे। 1994 तक विद्यालय जाने का औसत वर्ष साक्षरता स्तर का प्राक्कलन करने के लिए सूचकांक के रूप में लिया गया था। 1995 के प्रतिवेदन में यह सूचकांक संयुक्त, प्राथमिक और तृतीयक स्तर की पंजीकरण अनुपात से प्रतिस्थापित कर दिया गया था। प्रतिवेदन में दिया गया औचित्य यह था कि विभिन्न देशों द्वारा आपूर्त्ति आँकड़ों के बीच प्रतिस्पर्धा की कमी के साथ-साथ विश्वस्त आँकड़े मिलने में कठिनाइयाँ थीं। प्रतिवेदन में सम्मिलित दूसरा परिवर्तन सकल घरेलू उत्पाद (आय) का न्यूनतम मूल्य प्रतिव्यक्ति 200 डॉलर पीपीपी से कम करके 100 डॉलर पीपीपी करने से संबंधित था।

एक बार पुन: प्रतिवेदन में दिए गए औचित्य के अनुसार, उन देशों को शामिल करना था जिनका पीपीपी 200 डॉलर से कम थी। पूर्व प्रतिवेदनों में देखा गया था कि बहुत बड़ी संख्या में उन देशों जिनमें से अधिकांश ने पूर्ववर्त्ती उपनिवेशीय समूह का गठन किया था, का पीपीपी 200 डॉलर से कम था परन्तु उनके बीच काफी विभिन्नताएँ थीं।

2002 में प्रकाशित प्रतिवेदन के अनुसार, मानव विकास सूचकांक मानव विकास का एक सार है। यह किसी देश की औसत उपलब्धियों का मानव विकास के तीन मूलभूत आयामों में मापन करता है :

- जन्म के समय यथा अनुमानित दीर्घ और स्वस्थ जीवन।
- गौढ़ साक्षरता दर (दो-तिहाई के बराबर) और संयुक्त प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक समग्र नामांकन अनुपात (एक-तिहाई के बराबर) द्वारा यथा अनुमानित ज्ञान।
- प्रति व्यक्ति (अमेरिकी डॉलर पीपीएस) सकल घरेलू उत्पाद यथा अनुमानित शालीन जीवनस्तर।

यह भी महसूस किया गया है "मानव विकास सूचकांक परिकलित करने से पहले इनमें से प्रत्येक आयाम के लिए एक सूचकांक का सृजन आवश्यक है'' अत: यह महसूस किया गया था कि प्रत्येक सूचकांक के लिए अधिकतम और न्यूनतम मान (जिन्हें गोल पोस्ट के रूप में जाना गया) चुने जाने चाहिए।

वर्ष 2002 के लिए नियत गोलपोस्ट इस प्रकार है :

सूचकांक	अधिकतम मूल्य	न्यूनतम मूल्य
जन्म के समय अनुमानित जीवन (वर्षों में)	85 (एक देश के लिए)	25 (एक देश के लिए)
प्रौढ़ साक्षरता दर (प्रतिशतता)	100	0
संयुक्त समग्र नामांकन अनुपात (प्रतिशतता)	100	0
प्रति व्यक्ति सरल घरेलू उत्पाद (पीपीपी अमेरिकी डॉलर)	40,000	100

वर्ष 2002 के लिए आइवरी कॉस्ट के मामले में प्रत्येक सूचकांक के उदाहरणार्थ :

जन्म के समय अनुमानित जीवन (वर्षों में)	:	47.80
प्रौढ़ साक्षरता दर		46.80
समग्र नामांकन पर		38.00

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीपीपी अमेरिकी डॉलर)		:	1630.00
अनुमानित सूचकांक का परिकलन	= 47.8 - 25/85 - 25	=	0.380
प्रौढ़ साक्षरता सूचकांक का परिकलन	= 46.8 - 0/100 - 00	=	0.468*
समग्र नामांकन सूचकांक का परिकलन	= 38-0/100-00	=	0.380**

सकल घरेलू उत्पाद सूचकांक का परिकलन = लघु (1630) – लघु (100)/लघु (40000) . लघु 100
= 0.466

मानव विकास का परिकलन = 1/3 (अनुमानित जीवन सूचकांक का मान) +
1/3 (शिक्षा सूचकांक का मान) +
1/3 (सकल घरेलू उत्पाद सूचकांकों का मान)
अथवा
1/3 (0.380) + 1/3 (0.439) + 1/3 (0.466)
= 0.428

19.6 भारत में मानव विकास

कई विकासशील देशों से भिन्न भारत के पास सुविकसित सांख्यिकीय तंत्र है। उपनिवेशीय शासकीय मानसिकता को धन्यवाद, हमारे देश में अनेक ऐसी एजेंसियाँ हैं जो काफी लम्बे समय से हमारी अर्थव्यवस्था, राजतंत्र, पर्यावरण और संसाधनों आदि के विभिन्न पहलुओं पर सूचना और आँकड़े एकत्रित कर रही हैं। इनमें राष्ट्रीय जनसंख्या जनगणना, राष्ट्रीय परिवार एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण, नमूना पंजीकरण तंत्र, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण आदि मशहूर एजेंसियाँ हैं। तथापि यह महसूस किया गया था कि ये एजेंसियाँ विभिन्न पहलुओं पर सूचना एकत्रित करने में महत्त्वपूर्ण सहयोग कर रही हैं। परन्तु सूचना में समन्वयन की कमी है और यह प्रत्यक्ष रूप से जहाँ तक आँकड़ों का सवाल है, एक-दूसरे से सम्बन्धित नहीं हैं। NCAER के अबुसालेह शरीफ के अनुसार :

> *"जनसंख्या जनगणना जनसांख्यिकी लक्षणों और अन्य विभिन्नताओं पर विस्तृत सूचना उपलब्ध कराती है। इसमें आय, परिसम्पत्ति, स्वामित्व, खपत प्रतिदर्श और अन्य विभिन्नताओं पर कोई सूचना नहीं होती। यह महसूस किया गया कि ऐसा एकीकृत सर्वेक्षण उपयोगी रहेगा जिसमें मानव विकास के विभिन्न पहलू, जीवनस्तर, रोज़गार और नौकरियाँ, साक्षरता और शिक्षा, अस्वस्थता, अक्षमता और पोषण, पीडीएस, शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा आदि जैसी लोकसेवाओं की प्रभावकारिता और जनसांख्यिकीय लक्षण शामिल हों। ऐसे एकीकृत सर्वेक्षण से अनुसंधान करने वाले इन अलग-अलग विभिन्नताओं के बीच अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करने और उसके द्वारा बेहतर जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।"*

परिणामतः आज हमारे पास राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष प्रकाशित मानव विकास प्रतिवेदन है। यह प्रक्रिया योजनाओं और विद्वानों के बीच इतना लोकप्रिय हो चुकी है कि महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि कुछ प्रमुख राज्यों ने अपने-अपने राज्यों में मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किए हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि इस मामले में विश्लेषण एकक जिले हैं। इन प्रतिवेदनों का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होंने प्रतिवेदन तैयार करने के लिए भारत और राज्य विशिष्ट के सूचकांकों को शामिल करने की कोशिश की। उदाहरणार्थ, महाराष्ट्र राज्य के प्रतिवेदन में निम्नलिखित सूचकांक लिए गए हैं :

- शिशु मृत्यु और बाल मृत्यु दर।
- पोषण (2 वर्ष से कम आयु)

- मानव विकास सूचकांक और प्रतिव्यक्ति जिला घरेलू उत्पादन (वर्तमान मूल्य)
- साक्षरता दर, विद्यालय जाने का औसत वर्ष और उसे छोड़ने की दर
- 1991-2001 के लिए साक्षरता के उपलब्धि और सुधार सूचकांक
- ग्राम्य सुविधाओं का जिलेवार वर्गीकरण
- कच्चा, आधा पक्का, पक्का और सुविधाजनक घरों की जनगणना का प्रतिशतता वितरण

उपलब्ध सूचना मानव विकास सूचकांक के आधार पर विभिन्न जिलों का वर्गीकरण करने में प्रयुक्त की जाती है जो बाद में राज्य और केन्द्र सरकार के विभिन्न नीतिविकल्पों को दिशा-निर्देश देने में प्रयुक्त होती हैं।

19.7 सारांश

मानव विकास देशों के समग्र विकास के लिए सूचकों में से एक है। इसे किसी देश के धन, मानव संसाधन जो उसके पास हैं, स्वास्थ्य सुविधाएँ और जलकल्याण उपाय जो वह अपने नागरिकों को मुहैया कराता है अथवा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अभिज्ञात स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जल आपूर्ति, स्वच्छता और गृह निर्माण जैसी छह: मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना, के संदर्भ में मापा जा सकता है। राज्य के प्रत्येक क्रियाकलाप, सभी वैज्ञानिक अन्वेषकों और दो व्यष्टियों और व्यापारिक भागीदारों के बीच सभी अन्तर्क्रियाओं का अन्तिम लक्ष्य मानव विकास होना चाहिए। परन्तु, दुर्भाग्यवश इस विशेष पहलू पर अभी तक गौर नहीं किया गया है। हाल के वर्षों में मानव विकास पर रुचि का पुनर्जन्म हुआ है। विश्वस्तर पर कई विद्वानों और नेताओं ने बिना किसी भेदभाव के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के प्रति कार्य करने का दावा किया है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में भी 1990 में पहली बार मानव विकास की धारणा को परिभाषित करने का प्रयास किया गया। मानव विकास के व्यापक तौर पर मान्य सूचकांकों का परिकलन करने तथा मानव विकास सूचकांक को तैयार करने का भी प्रयास किया गया है। और यह कि प्रत्येक नई चुनौती को स्वीकार करते हुए इन धारणाओं पर कार्य करना जारी है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि पर्याप्त आँकड़े और सूचना न होने के कारण प्राक्कलन की अप्रत्यक्ष विधियों पर विश्वास करना पड़ता है। तथापि, यह देखा गया है कि विश्वस्तर पर प्रबल प्रभाव वाली शक्तियाँ मानव विकास सूचकांक को संप्रभु राज्यों के आन्तरिक मामलों में दखलन्दाजी के लिए प्रयोग कर रहे हैं। अत: मानव विकास एक महत्त्वपूर्ण धारणा है और मानव विकास सूचकांक को तैयार करना एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है परन्तु इस असमान विश्व में इसे परोक्ष उद्देश्यों को उचित सिद्ध करने के लिए भी प्रयुक्त करते हैं।

19.8 अभ्यास प्रश्न

1) मानव विकास से आप क्या समझते हैं? मानव विकास के अध्ययन के लिए विभिन्न अभिगम क्या हैं?

2) मानव विकास के प्रति मूलभूत न्यूनतम आवश्यकता अभिगम क्या है? इस अभिगम की आलोचना क्यों की जाती है?

3) मानव विकास के सूचकांकों की पहचान कीजिए। अन्य धारणाएँ और आयाम क्या हैं जिन्हें मानव विकास प्रतिवेदनों में मानव विकास की धारणा से जोड़ने की कोशिश की गई है?

4) भारत में मानव विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।